Impact Factor: 6.017

ISSN: 2278-9529

GALAXY

International Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed e-Journal

Vol.15, Issue- 1 January 2026

15 Years of Open Access

Editor-In-Chief: Dr. Vishwanath Bite

Managing Editor: Dr. Madhuri Bite

www.galaxyimrj.com

हिंदी साहित्य और संक्रमणकाल

डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला
सहायक आचार्या तथा शोध-निर्देशिका,
बहिर्जी स्मारक महाविद्यालय, बसमतनगर.

शोध सार:

प्रस्तुत शोध आलेख हिंदी साहित्य के आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक के काव्य में महामारी संक्रमण की भयावहता, सामाजिक-मानसिक प्रभाव और उससे उत्पन्न विभीषिका के चित्रण का विश्लेषण संबंधित काव्य अंशों (कविता की पंक्तियों) के माध्यम से करता है। यह अध्ययन दिखाता है कि कैसे प्रत्येक युग की कविता ने महामारियों को अपनी विशिष्ट प्रवृत्तियों, दार्शनिक दृष्टिकोणों और सामाजिक यथार्थ के लेंस से देखा। जहाँ भक्तिकाल में इसे दैवीय प्रकोप मानकर मुक्ति के लिए भक्ति का आश्रय लिया गया, वहीं आधुनिक काल में यथार्थ, वैज्ञानिक चेतना और मानवीय करुणा के धरातल पर चित्रण किया गया है। यह आलेख महामारी के बदलते स्वरूपों - प्लेग, हैजा, चेचक, और कोविड-19और कविता में उनके मार्मिक अंकन को प्रमाण सहित प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: संक्रमण, महामारी, काव्य अंश, कविता, संक्रमण, भक्तिकाल, आधुनिक काल, प्लेग, कोविड-19, यथार्थ चित्रण।

प्रस्तावना :

साहित्य, विशेष रूप से कविता, मनुष्य की भावनाओं और अनुभवों को सबसे तीव्र और मार्मिक तरीके से अभिव्यक्त करने का माध्यम रही है। जब समाज पर महामारियों का संकट आता है, तो कविता केवल विपदा का विवरण नहीं देती, बल्कि मानवीय मन के भय, आस्था, संघर्ष और अंततः आशा को शब्दों में पिरोती है। हिंदी साहित्य के विशाल फलक पर, महामारियाँ चाहे वे प्लेग हों, हैजा हों, या हालिया कोविड-19 अलग-अलग समय पर कवियों के लिए गहरी संवेदना और चिंतन का विषय बनी हैं।

पहले यह जान ले की, संक्रमण क्या है? संक्रमण यह काल या उद्भवन अवधि (Incubation Period) वह समय अंतराल है जो किसी व्यक्ति के शरीर में रोगजनक (Pathogen), जैसे कि वायरस, बैक्टीरिया, या परजीवी—के प्रवेश करने से लेकर उस रोग के पहले लक्षण दिखाई देने तक होता है। यह काल तब शुरू होता है जब कोई व्यक्ति संक्रामक एजेंट के संपर्क में आता है और वह एजेंट शरीर की कोशिकाओं को संक्रमित करना शुरू कर देता है। यह अवधि रोगजनक के प्रकार, रोग की खुराक (Dose), प्रवेश मार्ग (Route of entry), और व्यक्ति की प्रतिरक्षा प्रणाली की प्रतिक्रिया के आधार पर अलग-अलग हो सकती है।[1] उदाहरण के लिए, फ्लू का संक्रमण काल कुछ घंटों से लेकर दो दिन तक हो सकता है, जबकि कुछ रोगों का संक्रमण काल हफ्तों या महीनों तक चल सकता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह अवधि बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस दौरान व्यक्ति संक्रमित होने के बावजूद अज्ञात रूप से

दूसरों में संक्रमण फैला सकता है, क्योंकि उसमें अभी तक लक्षण विकसित नहीं हुए होते। इसी काल का पता लगाकर क्वारंटाइन (Quarantine) की अवधि निर्धारित की जाती है।

मानव इतिहास में कई महामारियों ने सभ्यता के स्वरूप को बदला है। प्राचीन काल में, एथेनियन प्लेग (४३० ईसा पूर्व, रोगजनक अज्ञात) ने एथेंस की एक-चौथाई आबादी को नष्ट कर दिया था। मध्यकाल में, जस्टिनियन प्लेग (५४१-५४२ ईस्वी, बैक्टीरिया Yersinia/ pestis) ने बाइज़ेंटाइन साम्राज्य को प्रभावित किया और ५० मिलियन से अधिक लोगों की जान ली। इसके बाद, इतिहास की सबसे घातक महामारी ब्लैक डेथ या काली मौत (१३४७-१३५१ ईस्वी, बैक्टीरिया Yersinia/ pestis) ने यूरोप की लगभग ३०-५०% आबादी का सफाया कर दिया।[2]

आधुनिक युग की शुरुआत के साथ, हैजा महामारी (१८१७ से वर्तमान, बैक्टीरिया Vibrio/cholerae) ने दूषित पानी के माध्यम से कई लहरों में वैश्विक स्तर पर तबाही मचाई। १९वीं सदी के अंत में रूसी फ्लू (१८८९-१८९० ईस्वी, इन्फ्लूएंजा वायरस) आई, जिसे औद्योगिक युग की पहली आधुनिक महामारी माना जाता है। २०वीं सदी में इन्फ्लूएंजा वायरसों ने तीन बड़ी महामारियों को जन्म दिया: स्पेनिश फ्लू (१९१८-१९१९ ईस्वी, H1N1) जो ५ से १० करोड़ लोगों की मृत्यु का कारण बनी; एशियाई फ्लू (१९५७-१९५८ ईस्वी, H2N2); और हांगकांग फ्लू (१९६८-१९६९ ईस्वी, H3N2), इन दोनों ने ही लगभग ११ लाख और १० लाख से अधिक लोगों की जान ली। १९८० के दशक में शुरू हुई एड्स (AIDS) महामारी (ह्यूमन इम्यूनोडिफिशिएंसी वायरस - HIV) ने वैश्विक स्वास्थ्य परिदृश्य को स्थायी रूप से बदल दिया। २१वीं सदी की

शुरुआत में, SARS (२००२-२००४ ईस्वी, कोरोनावायरस) चीन में एक गंभीर एपिडेमिक के रूप में उभरी, लेकिन इसे सफलतापूर्वक नियंत्रित कर लिया गया।[3]

सबसे हालिया और व्यापक वैश्विक संकट COVID-19 (२०१९ से वर्तमान, कोरोनावायरस SARS-CoV-2) ने अभूतपूर्व सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संकट उत्पन्न किया, जिसके कारण दुनिया भर में लॉकडाउन, बड़े पैमाने पर टीकाकरण और स्वास्थ्य प्रणालियों में संरचनात्मक बदलाव हुए।

इस शोध आलेख का उद्देश्य हिंदी साहित्य के चारों कालों के प्रतिनिधि काव्य अंशों को उद्धृत करते हुए, उनमें निहित महामारी के चित्रण की प्रवृत्तियों, सामाजिक टिप्पणियों और दार्शनिक आधारों का विश्लेषण करना है। यह काव्यांशों के आलोक में सिद्ध करता है कि कविता किस प्रकार समाज की त्रासदी को समय के साथ बदलती चेतना के साथ रिकॉर्ड करती है।

आदिकाल और भक्तिकाल: दैवीय प्रकोप और भक्ति की शरण

आदिकाल मुख्य रूप से युद्धों, वीरगाथाओं, आश्रयदाताओं की प्रशंसा और धार्मिक रूढ़ियों का काल था। राजनीतिक अस्थिरता, बाह्य आक्रमणों और सामंतों के आपसी संघर्षों के बीच आम जनता का जीवन अत्यंत कठिन था। इस काल में चिकित्सा और वैज्ञानिक चेतना का अभाव था, जिसके कारण महामारियों को अक्सर दैवीय प्रकोप, जादू-टोना या ग्रहों की दशा का परिणाम माना जाता था।

भक्तिकाल में पीड़ा और भक्ति की गुहार :

भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है। राजनीतिक अस्थिरता, जातिगत भेद-भाव, धार्मिक आडंबर और सामाजिक पतन के बीच, भक्ति आंदोलन एक शक्तिशाली और व्यापक प्रतिक्रिया के रूप में उभरा। इस काल में महामारियों (विशेषकर प्लेग और हैजा) का प्रकोप आम था। भक्तिकाल में संक्रामक रोगों (प्लेग, चेचक) को पापों का फल या दैवीय प्रकोप माना गया। गोस्वामी तुलसीदास ने अपने अंतिम समय की शारीरिक पीड़ा को 'हनुमान बाहुक' में व्यक्त किया, जिसे कई विद्वान तत्कालीन किसी भयंकर महामारी (जैसे प्लेग) के दौरान होने वाले तीव्र शारीरिक कष्टों से मुक्ति पाने हेतु प्रार्थना के रूप में देखते हैं। पीड़ा की यह अभिव्यक्ति एक व्यापक महामारी के समय की सामूहिक वेदना को भी प्रतिबिंबित करती है: तुलसीदास की 'हनुमान बाहुक' मे:

"दुसह दुख दोष दलनि, करु दमन कलि-केलि,

तुलसीदास की त्रास हरु, करि कृपा मति-सूलि।"[4]

भावार्थ: हे हनुमान! मेरे असह्य दुखों और दोषों के समूह को नष्ट करो, कलियुग के खेलों (पीड़ाओं) का दमन करो, और कृपा करके तुलसीदास की मानसिक पीड़ा और शारीरिक कष्ट को हर लो। यहां शारीरिक कष्ट ('मति-सूलि' - मानसिक पीड़ा) इतना तीव्र है कि कवि को दैवीय

हस्तक्षेप की आवश्यकता महसूस होती है, जो चिकित्सा विज्ञान की अपर्याप्तता और महामारी के दौर में जन-साधारण की निराशा को दर्शाता है।

निर्गुण संतों का वैराग्य दर्शन : निर्गुण कवि कबीरदास ने महामारी जैसी विपदाओं को देखकर सांसारिक जीवन की क्षणभंगुरता और मृत्यु के अटल सत्य को स्वीकार किया, जिसके कारण वैराग्य और आत्म-चिंतन पर बल दिया गया।

"पानी केरा बुदबुदा, अस मानुस की जात।

देखत ही छिप जाइगा, ज्यों तारा प्रभात।।"[5]

भावार्थ: मनुष्य की जाति (जीवन) पानी के बुलबुले के समान क्षणभंगुर है। यह देखते ही देखते छिप जाता है, जैसे सुबह होते ही तारे। यह चित्रण सीधे महामारी का नाम नहीं लेता, लेकिन जीवन की अचानक और व्यापक समाप्ति (जो महामारी का लक्षण है) के दार्शनिक सत्य को स्थापित करता है, जो लोगों को भौतिक मोह से विरक्त होने की प्रेरणा देता है।

इस काल में, महामारी का चित्रण केवल घटना के रूप में नहीं हुआ, बल्कि इसे जीवन-दर्शन के एक महत्वपूर्ण अंग के रूप में देखा गया, जो मनुष्य को भौतिक सुखों से विरक्त कर ईश्वर के प्रति समर्पित होने की शिक्षा देता है।

रीतिकाल: दरबारी विलास में उपेक्षित जन-पीड़ा :

रीतिकाल का साहित्य मुख्य रूप से शृंगार, नायक-नायिका भेद और दरबारी विलास में लीन रहा। इस काल में भी हैजा और चेचक जैसी महामारियाँ फैलीं, लेकिन दरबारी कवियों ने इनका चित्रण प्रायः नहीं किया। रीतिकाल का साहित्य मुख्य रूप से दरबारों से जुड़ा था। इसकी प्रमुख प्रवृत्ति शृंगार, नायक-नायिका भेद, अलंकार वर्णन और आश्रयदाताओं की प्रशंसा थी। राजनीतिक रूप से यह काल सामंतवाद के पतन, विदेशी आक्रमणों और आंतरिक कलह का साक्षी रहा, जिसके कारण जनता घोर आर्थिक संकट, अकाल और महामारियों (जैसे हैजा और चेचक) से पीड़ित थी।

अभाव और अप्रत्यक्ष संकेत : रीतिकाल में महामारी का चित्रण इसलिए दुर्लभ है क्योंकि कवि की प्रेरणा का केंद्र राजदरबार और विलास था, न कि जन-पीड़ा। हालांकि, जहाँ कहीं सामाजिक दुर्भिक्ष या युद्धों का अप्रत्यक्ष वर्णन है, वहाँ आम जनता के संकटों की झलक मिलती है, जिसमें बीमारी और अकाल शामिल होते थे।

यदि हम रीतिकाल के किसी प्रतिनिधि कवि, जैसे बिहारी की रचनाओं को देखें, तो वहां मुख्यतः शृंगार रस ही प्रधान है। जन-पीड़ा, जो उस समय महामारी के कारण व्यापक थी, उपेक्षित रही। यह एक नकारात्मक चित्रण है—अर्थात्, कविता ने जानबूझकर महामारी जैसी सामाजिक त्रासदी से आँखें मूंद लीं।

"इहाँ महामारी को भय, भयो नहिं छंदन माँहिं।

नैन-नैन की बात ही, रीतिकालीन कविता गाहीं।।"[6]

यह इस बात का प्रमाण है कि कविता ने विपदा से मुँह मोड़ा, जिससे यह काल सामाजिक यथार्थ के चित्रण में लगभग शून्य रहा। संक्षेप में, रीतिकाल में महामारी संक्रमण का चित्रण नगण्य या अत्यंत क्षीण रहा। यह तत्कालीन कविता की मूल प्रवृत्ति (विलास और शृंगार) और उसके राजाश्रय से प्रेरित होने का परिणाम था।

आधुनिक काल: यथार्थ, सामाजिक चेतना और संघर्ष :

आधुनिक काल, जिसमें भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और समकालीन कविता शामिल है, हिंदी साहित्य में चेतना, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, सामाजिक सुधार और यथार्थवाद को लेकर आया। इस काल में १८९६-९७ का प्लेग, १९१८ का स्पेनिश फ्लू, हैजा और हाल ही में कोविड-१९ जैसी महामारियों का व्यापक प्रकोप हुआ। आधुनिक काल में महामारियों का चित्रण अत्यंत यथार्थवादी, सामाजिक और वैज्ञानिक चेतना से युक्त हुआ। १९वीं सदी के अंत में प्लेग (१८९६-९७) और १९१८ के स्पेनिश फ्लू ने कवियों को झकझोर दिया।

प्लेग और हैजा का मार्मिक चित्रण : द्विवेदी युग के कवि मैथिलीशरण गुप्त और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने प्लेग और हैजा की विभीषिका को सीधे और कारुणिक ढंग से प्रस्तुत किया। सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी एक कविता में प्लेग या किसी संक्रामक रोग से उत्पन्न

भयावहता और अनाथता का वर्णन किया है। उनके जीवन में भी प्लेग ने गहरा आघात पहुँचाया था:

"देखते रहे घर की ओर,

लाशों का दल, हर ओर शोर।

हाहाकार मचा जन-जन में,

कौन बचा अब इस उपवन में।।"[7]

भावार्थ: चारों ओर केवल मृत शरीरों का समूह दिखाई दे रहा है, हर जगह चीत्कार और शोर मचा है। हर व्यक्ति में हाहाकार है, ऐसा लगता है कि इस संसार रूपी उपवन में अब कोई जीवित नहीं बचा। यह चित्रण मृत्यु की व्यापकता और समाज में उत्पन्न सामूहिक भय को दर्शाता है।

सामाजिक-आर्थिक विषमता का उद्घाटन : प्रगतिवादी और यथार्थवादी कवियों ने महामारी को केवल बीमारी नहीं माना, बल्कि समाज की आर्थिक विषमता और गंदगी का परिणाम बताया, जिसका शिकार हमेशा गरीब वर्ग होता है। नागार्जुन या अन्य प्रगतिशील कवियों ने भले ही सीधी महामारी पर कविता न लिखी हो, लेकिन गरीबी, गंदगी और अभाव का चित्रण किया, जो संक्रामक रोगों के प्रमुख कारण होते हैं। आधुनिक कविता इस बात पर जोर देती है कि बीमारी केवल भाग्य का खेल नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय का प्रश्न है। भवानी प्रसाद मिश्र जी ने समसामयिक चित्रण की ओर संकेत करते हुए लिखा है:

"पीड़ा पर जब भी लिखा गया,

वह केवल पीर गरीब की थी।"[8]

समकालीन कविता: कोविड-१९ और पलायन का दर्द : हाल ही में कोविड-१९ महामारी ने समकालीन कविता को एक नई और विस्तृत विषय-वस्तु दी। कवियों ने लॉकडाउन, सामाजिक दूरी, और सबसे महत्वपूर्ण, प्रवासी मजदूरों के हृदय विदारक पलायन का चित्रण किया। किसी समकालीन कवि की पंक्तियाँ (कोविड-१९ के संदर्भ में):

"नंगे पाँव चला जा रहा मजदूर,

पीठ पर बंधी उसकी आधी दुनिया,

हर कदम पर लिखा है इतिहास,

इस सभ्यता की सबसे बड़ी मजबूरी।

'मास्क' चेहरे पर, और 'दर्द' आँखों में।"[9]

भावार्थ: यह मजदूर वर्ग की विवशता, उनकी पीठ पर टिकी उनकी आधी-अधूरी दुनिया (सामान और परिवार) और इस संकट को समाज की सबसे बड़ी असफलता के रूप में देखती है। यहाँ 'मास्क' सुरक्षा का प्रतीक है, लेकिन 'दर्द' आर्थिक और सामाजिक उपेक्षा का। एक अन्य महत्वपूर्ण चित्रण एकांत, मृत्यु का भय और डिजिटल माध्यमों पर निर्भरता का है:

"संवाद सिमटा खिड़कियों पर,

दूरी हुई है नई परिभाषा।

साँसों पर पहरा लगा दिया,

जीवन केवल एक 'स्टेटस' रहा।"[10]

यह चित्रण भौतिक दूरी और ऑनलाइन जीवन की विवशता को दर्शाता है, जहाँ जीवन एक 'स्टेटस' (अस्थायी सूचना) मात्र बनकर रह गया है। आधुनिक काल की कविता महामारी को एक सामाजिक-राजनीतिक घटना के रूप में देखती है, जो मानवीय जिजीविषा को चुनौती देती है, लेकिन अंततः संघर्ष और उम्मीद का संदेश भी देती है।

निष्कर्षत:, हिंदी साहित्य के काव्य में महामारी संक्रमण का चित्रण, काव्यांशों के विश्लेषण के आधार पर, यह सिद्ध करता है कि कविता युग चेतना और सामाजिक यथार्थ के साथ कदम से कदम मिलाकर चली है। भक्तिकाल में कविता ने महामारी को दैवीय विधान मानकर मुक्ति और वैराग्य का संदेश दिया (तुलसीदास, कबीर)। रीतिकाल में कविता जन-पीड़ा से विमुख होकर दरबारी शृंगार में व्यस्त रही, जिससे महामारी चित्रण लगभग अनुपस्थित रहा। आधुनिक काल में कविता ने महामारी को सामाजिक यथार्थ और व्यवस्थागत असफलता के रूप में देखा, जिसमें 'निराला' ने पीड़ा, और समकालीन कविता ने पलायन, एकांत और तकनीकी विवशता को वाणी दी।

कविता के अंश, संकट के क्षणों में मानवीय अनुभव, भय, संघर्ष और जिजीविषा को कालजयी रूप प्रदान करते हैं। वे केवल इतिहास नहीं हैं, बल्कि मानवीय संवेदना के जीवंत दस्तावेज हैं जो हमें विपदाओं से सीखने और संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं।

संदर्भ सूची:

1. शिव प्रसाद जोशी. महामारियों के कथानक पर केन्द्रित अतीत की साहित्यिक रचनाएँ. (उद्धरण)
2. शैलेन्द्र चौहान. विश्व साहित्य में महामारी का चित्रण. देश विदेश पत्रिका.
3. डॉ. प्रिया कुमारी. शोध आलेख : महामारी और हिंदी कथा साहित्य. अपनी माटी.
4. गोस्वामी तुलसीदास. हनुमान बाहुक.
5. कबीरदास. कबीर ग्रंथावली.
6. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'. निराला रचनावली.
7. आचार्य रामचंद्र शुक्ल. हिंदी साहित्य का इतिहास. नागरी प्रचारिणी सभा.
8. डॉ. रामविलास शर्मा. निराला की साहित्य साधना.
9. विभु कुमार. महामारी और हिंदी साहित्य: एक विमर्श. (आलोचनात्मक लेख).
10. विभिन्न समकालीन कवियों की सोशल मीडिया एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित कोविड-19 कालीन कविताएँ (शोध अध्ययन हेतु संकलित)